विष्णु नागर

ईश्वर की कहानियाँ

एक बार ईश्वर दिल्ली की डीटीसी बस में चढ़े।

कण्डक्टर ने कहा, "टिकिट।"

ईश्वर ने कहा, "स्टाफ।"

कण्डक्टर ने पूछा, "कौन-सा स्टाफ?"

ईश्वर ने कहा, "मैं ईश्वर हूँ।"

"ईश्वर स्टाफ में नहीं आता। टिकिट लो,"

कण्डक्टर ने कहा

ईश्वर क्रुद्ध हो गए।

उन्होंने कहा, "मेरे नाम पर जो लोग गाना गा गाकर भीख माँगते हैं उन्हें तो तू मुफ्त में सफर करने देता है और मुझसे टिकिट माँगने की बदतमीज़ी कर रहा है? देख लूँगा तुझे।"

तब तक बस स्टॉप आ गया। चेकिंग करने वाले चढ़े। उन्होंने बेटिकिट ईश्वर को नीचे उतार दिया और बीस रुपए की टिकिट काट दी।

ईश्वर को 2500 वर्ष पुराना बोधि वृक्ष दिखाया गया

उस वृक्ष को देख ईश्वर बोले, "यह वृक्ष तो मुझसे भी पुराना है।"

एक भक्त ने पूछा, "भगवान, आप अपनी पूजा तो पृथ्वी पर करवाते हैं और रहते स्वर्ग में हैं। यह विरोधाभास क्यों?"

"इसलिए कि, बच्चे घर की मुर्गी दाल बराबर होती है," ईश्वर ने रहा।

एक दिन ईश्वर एक दुकान के बाहर कोकाकोला पी रहे थे। सच्चे भक्त को यह पहचानने में देर न लगी कि ये ईश्वर हैं। उसने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, "आप ईश्वर होकर विदेशी पेय पी रहे हैं?" ईश्वर ने जवाब दिया, "भक्त, मैं तो पेप्सी भी पी चुका हूँ।" भक्त ने अपने कान पकड़े और कहा, "प्रभु, आपको यह सब शोभा नहीं देता।" ईश्वर ने कहा, "भक्त होकर तुम पीते हो, मुझे तरसाते हो और फिर कहते हो कि मुझे विदेशी ठण्डे पेय पीना शोभा नहीं देता।" इस पर भक्त ने कहा, "हम तो मनुष्य हैं। हम तो ऐसी गलती कर सकते हैं।" ईश्वर का जवाब था, "तो, मूर्ख, मैं भी तो तुम्हारा ही ईश्वर हूँ।"